बन्धन से मुक्ति बड़ी कठिन है। कारण, माया की नियन्त्री परमेश्वर की वह इच्छाशक्ति है जिसका जीव उल्लंघन नहीं कर सकते। माया (अपरा प्रकृति) को इस श्लोक में 'दैवी' कहा गया है, क्योंकि वह भगवान् से सम्बन्धित है और भगवत्-इच्छा के अनुसार कार्य करती है। श्रीभगवान् की इच्छा-शक्ति द्वारा संचालित होने के कारण यह अपरा प्रकृति निकृष्ट होने पर भी सृष्टि की संरचना-विनाश जैसे अद्भुत कार्य कर लेती है। वेदों से प्रमाणित है:

**मायां तु प्रकृतिं विद्यान्मायिनं तु महेश्वरम्।**

माया अनित्य है, परन्तु उसके पृष्ठ-आधार स्वयं महेश्वर श्रीभगवान् हैं।

'गुण' शब्द का एक अर्थ रज्जु (रस्सी) भी है। यह समझना चाहिए कि बद्धजीव मोह की रस्सी में जकड़ा हुआ है। वह मनुष्य, जिसके सब अंग बँधे हुए हों, स्वयं अपने को मुक्त नहीं कर सकता। इसके लिए आवश्यक है कि कोई मुक्त मनुष्य उसकी सहायता करे। एक बन्दी दूसरे बन्दी को मुक्त नहीं करा सकता; त्राता वही हो सकता है, जो स्वयं स्वतन्त्र हो। अतः भगवान् श्रीकृष्ण अथवा उनके सच्चे प्रकाश—गुरुदेव ही बद्धजीव को मुक्त कर सकते हैं। ऐसी सहायता के बिना माया-बन्धन से मुक्ति नहीं हो सकती। भगवद्भक्ति अथवा कृष्णभावना मुक्ति-पथ में परम सहायक सिद्ध होती है। मायाधीश्वर भगवान् श्रीकृष्ण ही इस दुस्तर माया शक्ति को जीव को मुक्त कर देने का आदेश दे सकते हैं। शरणागत जीव पर अपनी अहैतुकी करुणा और मूल रूप में अपने प्रिय पुत्र जीव पर वात्सल्य स्नेह से प्रेरित होकर वे उसकी मुक्ति का आदेश दे देते हैं। अतः भगवान् के चरणों की शरणागति माया के भीषण बन्धन से मुक्ति का एकमात्र साधन है।

**माम् एव** पद भी बड़ा सारगर्भित है। **माम्** का तात्पर्य भगवान् श्रीकृष्ण (विष्णु) से है, ब्रह्मा अथवा शिव से नहीं। उच्च देव-पदासीन होने के रूप में ब्रह्मा और शिव प्रायः श्रीविष्णु के समकक्ष हैं, पर रजोगुण-तमोगुण के ये अवतार बद्धजीव को माया बन्धन से मुक्त नहीं करा सकते। भाव यह है कि ब्रह्मा और शिव भी माया के आधीन हैं। माया से स्वामी एकमात्र श्रीविष्णु हैं। अतएव बद्धजीव की मुक्ति करने में एकमात्र वे समर्थ हैं। वेदों में इस सत्य का समर्थन है: **तमेव विदित्वा**, अर्थात् श्रीकृष्ण के तत्त्व-ज्ञान से ही मुक्ति हो सकती है।' स्वयं श्रीशिव ने स्वीकार किया है कि श्रीविष्णु के अनुग्रह से ही मुक्ति होती है। उनका वचन है:

**मुक्तिप्रदाता सर्वेषां विष्णुरेव न संशयः**

'सम्पूर्ण जीवों को मुक्ति देने वाले निःसन्देह श्रीविष्णु ही हैं।'

**न मां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः।**
**माययापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः।।१५।।**